P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-5* January- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

शारीरिक चुनौतियुक्त विद्यार्थियों के समायोजन एवं स्वबोध का अध्ययन

गोपाल सिंह शेखावत
व्याख्याता,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
श्री गोविन्दसिंह गुर्जर
राजकीय महाविद्यालय,
नसीराबाद,
अजमेर, राजस्थान

रतनलाल सुथार
रिसर्च स्कॉलर,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
जय नारायण व्यास
विश्वविद्यालय,
जोधपुर, राजस्थान

सारांश

''शारीरिक चुनौतियुक्त मुझमें नहीं बल्कि वातावरण की बाधाओं में है।''

शारीरिक चुनौतियुक्त विद्यार्थियों की शिक्षा व विकास पर भी ध्यान केन्द्रित करना अपरिहार्य है। इन विद्यार्थियों में एक ऐसी शारीरिक विकलांगता है जिसमें माँसपेशियों तथा अस्थियों के दोष व विकार पाये जाते हैं, जिनकी वजह से इन विद्यार्थियों को अंग संचालन में अत्यधिक कठिनाई का सामना करना पड़ता है। यहाँ तक कि चलने फिरने तथा कमेन्द्रियों के द्वारा अपना कार्य करने व अधिगम अनुभव अर्जित करने में काफी बाधाएँ आती है और जिनकी वजह से इन्हें विभिन्न प्रकार के समायोजन, शिक्षा तथा विकास संबंधी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। चूंकि मानव एक सामाजिक प्राणी है। समाज में मान्यता प्राप्त करना मानव की सार्वभौमिक इच्छा होती है। कोई भी स्थिति हो, स्थान हो या दशा हो प्रत्येक व्यक्ति दूसरों से मान्यता, स्वीकृति प्राप्त करना चाहता है। शारीरिक चुनौतियुक्त विद्यार्थियों के लिए स्वयं को मूल्यहीन, दीन–हीन अति सहज है, कारण, वह इन गुणों से वंचित है। ऐसी स्थिति में जरूरी हो जाता है कि उसे कुसमायोजित होने से बचाएँ। शिक्षा के समुचित प्रबन्ध द्वारा ही विद्यार्थियों को सही दिशा निर्देश दिया जा सकता है, जिससे वे शैक्षिक, व्यवसायिक, व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन में सुसमायोजित हो सके।

समायोजन का मुख्य तत्व है – स्व (Self), जिसे अध्ययन करने की महत्वपूर्ण विधि है – स्वबोध (Self Esteem)। वर्तमान सामाजिक परिपेक्ष्य में, परिवेश में सामाजिक आर्थिक स्तर, शिक्षा का माध्यम, विद्यालय का वातावरण व संस्कारों का छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व, स्वबोध, स्वप्रत्यक्षीकरण व विचारधारा पर प्रभाव पड़ता है। जब कोई शारीरिक चुनौतियुक्त विद्यार्थियों में स्वयं को हीन समझने लगता है, नकारात्मक स्वबोध रखता है, तो यह निम्न स्वबोध उसे वातावरण के साथ समायोजित होने से रोकता है। इस प्रकार समायोजन व स्वबोध परस्पर एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। साथ ही वातावरण में उपस्थित विभिन्नताओं के कारण विद्यार्थियों की समायोजन व स्वबोध में भेद, विरोध उत्पन्न होने लगता है। शारीरिक चुनौतियुक्त छात्र–छात्राओं के समायोजन व स्वबोध में अन्तर पता लगाने, जानने के मन्तव्य से शोधकार्य में जोधपुर व भीलवाड़ा जिले के शारीरिक चुनौतियुक्त विद्यार्थियों का चयन कर उनके समायोजन व स्वबोध का अध्ययन किया गया।

मुख्य शब्द : शारीरिक चुनौतियुक्त विद्यार्थी, समायोजन एवं स्वबोध।

प्रस्तावना

''चलता हूँ या चलती हूँ, क्यों मजाक बनाते हो हमारा इस कदर की, खुद से नफरत होने लगती है। हम कुछ नहीं चाहते बस आपका प्यार चाहते हैं, समाज में जगह बनाना चाहते हैं।''

किसी भी देश अथवा समाज को सामान्य एवं प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के अतिरिक्त शारीरिक या मानसिक विकलांगता युक्त विद्यार्थियों की शिक्षा एवं विकास पर भी अवधान केन्द्रित करना अपरिहार्य है। विकलांग होना एक सामाजिक समस्या है। इसके संदर्भ में वर्ष 1981 अन्तर्राष्ट्रीय विकलांग वर्ष के रूप में मनाया गया है। 1991–92 में 3 दिसम्बर से अन्तर्राष्ट्रीय विकलांग दिवस के तौर पर विश्व के साथ–साथ भारत जैसे कई देशों में मनाया जाने लगा है। 1992 से ही विश्व में इस दिन एक थीम लेकर काम किया जाता है। इस वर्ष 2017 में भी अन्तर्राष्ट्रीय विकलांग दिवस मनाये जाने की थीम 'सभी के लिए सतत् और समाज की ओर परिवर्तन' इसके द्वारा विकलांग व्यक्तियों के प्रति लोगो का रवैइया सकारात्मक जागरूकता बढ़ाना और विकलांगता वाले व्यक्तियों को या शारीरिक चुनौतियुक्त छात्र एवं छात्राओं को मिलने वाले सम्मान, अधिकार

और जीवन में खुशहाली के लिए समर्थन को जुटाना है। इसके साथ ही राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक स्वबोध एवं सुसमायोजित जीवन से जुड़े हल पहलु में शारीरिक रूप से विकलांग व्यक्तियों व शारीरिक चुनौतियुक्त छात्र एवं छात्राओं का एकीकरण करने के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। वर्ष 1969 में सरकार ने विकलांगता वाले शारीरिक चुनौतियुक्त छात्र एवं छात्राओं या व्यक्तियों के संबंध में सर्वश्रेष्ठ नियोक्ता के साथ श्रेष्ठ कर्मचारी पुरस्कार प्रदान करने की शुरूआत की। दिव्यांगों को मुख्यधारा में लाने के लिए सरकार प्रयास करती रहती है। इन्हें शिक्षित करना उच्च शिक्षा प्राप्त करके जब वे आत्मनिर्भर बनेंगे तभी सही मायनों में वे सशक्त बन पायेंगे। विभिन्न संस्थाओं में दिव्यांग छात्र–छात्राओं के आरक्षण की महत्ता को समझा गया है, इसलिए पर्सन्स विद डिसएबिलिटी एक्ट,1995 लाया गया जिसके तहत देश के सरकारी संस्थाओं में दिव्यांगों के लिए विभिन्न सुविधाएँ निर्धारित की गई है। फलतः शारीरिक चुनौतियुक्त विद्यार्थियों की शिक्षा एवं पुर्नवास पर अत्यधिक ध्यान केन्द्रित किया गया।

शारीरिक चुनौतियुक्त विद्यार्थियों के स्वबोध, रूचि स्वधारणा, अभिवृत्ति, उपलब्धि, अभिप्रेरणा, दुश्चिंता एवं समायोजन का अध्ययन आवश्यक है। यही अध्ययन इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि व्यक्ति की आकांक्षाओं, आदतों, स्वबोध, स्वधारणाओं, दुश्चिंता का प्रभाव, समायोजन आदि का वातावरण का भी प्रभाव पड़ता है।

मनुष्य को अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए अपने वातावरण तथा परिस्थितियों के साथ समायोजन करना पड़ता है। यह आवश्यक नहीं है कि समायोजन की प्रक्रिया में सफलता ही प्राप्त हो। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सफल होने के लिए व्यक्ति को समायोजन की क्षमता होनी चाहिए। समायोजन एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे मानसिक व व्यवहारिक दोनों प्रकार की प्रक्रियाएँ निहित होती है।

वर्तमान सामाजिक परिप्रेक्ष्य में सामाजिक–आर्थिक स्तर, शिक्षा का माध्यम, विद्यालय का वातावरण व संस्कारों का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, स्वबोध, प्रत्यक्षीकरण व विचारधारा पर प्रभाव पड़ता है। एक सामान्य विद्यार्थी जहाँ प्रायः स्वयं को सक्षम, योग्य पाता है, आत्मविश्वास से परिपूर्ण होता है वहीं शारीरिक चुनौतियुक्त विद्यार्थियों के लिए स्वयं को मूल्यहीन, दीन–हीन मानना अति सहज है, कारण वह इन गुणों से वंचित है।

शारीरिक चुनौतियुक्त विद्यार्थियों को दया की नहीं सहयोग की आवश्यकता होती है। इनकी भावनाओं और समस्याओं को समझकर ही शारीरिक चुनौतियुक्त विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में हम सहयोग प्रदान कर सकते हैं। शोधकर्ता ने इसी तथ्य से प्रेरणा प्राप्त कर शारीरिक चुनौतियुक्त विद्यार्थियों के स्वबोध एवं समायोजन के अध्ययन का मन्तव्य बनाया।

उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने वर्तमान समस्या का कथन उपर्युक्त आधार पर इस प्रकार दिया है –

''शारीरिक चुनौतियुक्त विद्यार्थियों के समायोजन एवं स्वबोध का अध्ययन''

साहित्यावलोकन

शारीरिक चुनौतियुक्त विद्यार्थियों से संबंधित पूर्व में किये गये अध्ययन में मुख्य रूप से निम्न अध्ययन सम्मिलित हैं –

1. माथुर मनोरमा (1994–95) – विकलांग बालक सामान्य बालकों की अपेक्षा अधिक तनावग्रस्त होते हैं तथा अधिक विचारवान व शंकालु होते हैं।
2. पांडे अनिरूद्ध (1970) – इन्होंने पाया कि सामाजिक समायोजन के क्षेत्र में तीक्ष्ण बुद्धि वाले विद्यार्थी, सामान्य बुद्धि वाले विद्यार्थियों की तुलना में ज्यादा समस्याओं का सामना करते हैं।
3. सिहं एच.बी. (1982) – ने अपने अध्ययन में पाया कि लड़के व लड़कियों के समूह में समायोजन में अन्तर नहीं है।
4. कुमारी सरिता एवं कुमारी शाहिन परवीन (1986) – के अनुसार शैक्षिक तथा संवेगात्मक समायोजन के मध्य सार्थ संबंध पाया गया। शैक्षिक समायोजन तथा सामाजिक आर्थिक स्तर के मध्य संबंध पाया गया।
5. कच्छावाह वनीता (1994) – उन्होंने पाया कि सामान्य वर्ग व विकलांग वर्ग के छात्रों के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
6. चौहान दीपिका (1991–92) – उन्होंने अपने शोधकार्य ''विकलांग छात्रों की स्वधारणा, उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं समायोजन का अध्ययन'' में पाया कि समायोजन की दृष्टि से सामान्य तथा विकलांग छात्रों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
7. राठौड़, कुसुम (2001–02) – शारीरिक विकलांग छात्राएँ छात्रों की तुलना में ज्यादा समायोजित पाई गई।
8. कंसारा हेमलता (2010–12) – के अध्ययन के अनुसार निष्कर्ष शारीरिक विकलांग विद्यार्थियों में मूक–बधिर व अन्य रूप से शारीरिक बाधित विद्यार्थियों के सम्रग समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
9. शर्मा कल्पना (2013–14) – के अनुसार माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विकलांग विद्यार्थियों के समायोजन एवं शैक्षिक निष्पति के मध्य सहसंबंध नहीं होता है।
10. चौधरी किरण (2014) – इन्होंने बताया कि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पति के संदर्भ में समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
11. राठौड़ गोरखनाथ (2012–14) – इन्होंने बताया कि विशेष व सामान्य विद्यालय में विकलांग विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर नहीं होता है। विशेष विद्यालय के छात्रों का सामाजिक समायोजन सामान्य विद्यालय के छात्रों की तुलना में अच्छा होता है।
12. जैन अनिता (2014–15) – के अनुसार माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की समायोजन व शैक्षिक निष्पति के प्राप्तांकों के आधार पर गणना द्वारा धनात्मक सहसंबंध पाया जाता है।

13. अग्रवाल, एस. (1982) –उन्होंने बताया कि सृजनात्मक विकास हेतु स्वबोध एक महत्वपूर्ण कारक है तथा स्वबोध तथा पारिवारिक पृष्ठभूमि की अन्तःक्रिया का सजृनात्मकता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
14. पियर्स व हैरिस (1964) तथा पुर्की (1970) – के अनुसार स्वबोध तथा शैक्षिक उपलब्धि में उच्च धनात्मक सहसंबंध पाया जाता है।
15. आर्किन, एम्पलमैन व बर्गर (1980) एवं अन्य – के अनुसार वे विद्यार्थी जो अपना कार्य खुद करते हैं, उनका स्वबोध भी उच्च होता है।
16. हार्ट, जे.जी. (1981) – इनके द्वारा किये अध्ययन के अनुसार स्वबोध व शैक्षिक उपलब्धि में कोई सहसंबंध नहीं पाया गया।
17. शेवेल्सन व बोलस (1982–83) – के अनुसार निष्कर्ष विद्यालय में विद्यार्थी के प्रत्येक अधिगम स्तर पर अधिगम की सफलता में स्वबोध एक महत्वपूर्ण कारक की भूमिका निभाता है।
18. शिक्षा विभाग, कैलिफोर्निया (1990) – के अध्ययन के अनुसार वे माता–पिता जिनका स्वबोध उच्च होता है, उनके बच्चे भी उच्च स्वबोध प्रदर्शित करते हैं।
19. पुरोहित शिवदत्त (2012) – इन्होंने बताया कि माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालय में विद्यार्थी स्वबोध में अन्तर महसूस नहीं करते हैं।
20. जैन राजेन्द्र कुमार (2007) – उन्होंने बताया कि सामान्य एवं अस्थिदोष युक्त विकलांग विद्यार्थियों के स्वबोध में पाई वर्ग परीक्षण द्वारा 0.1 सार्थकता स्तर पर कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। दोनों ही समूहों में सकारात्मक स्व तथा ऋणात्मक स्व वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत लगभग समान पाया गया।
21. अनन्ता देवी (2013) – उन्होंने बताया कि राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के विद्यालयों के विद्यार्थी स्वबोध में अन्तर महसूस नहीं करते हैं।
22. राजस्थान पत्रिका, रिश्ते पृष्ठ 09,2017 — शारीरिक चुनौतियुक्त विद्यार्थियों के कानून के बारे में बताया गया।

अध्ययन में प्रयुक्त शब्दावली

प्रस्तुत शोध में निम्न शब्दों का प्रयोग हुआ है :–

1. शारीरिक चुनौतियुक्त विद्यार्थी
2. समायोजन
3. स्वबोध

शारीरिक चुनौतियुक्त विद्यार्थी

वेबेस्टर शब्दकोष (1981)

'विकलांगता वह बाधा है, जो उपलब्धियों को सामान्य रूप से दुष्कर बना देती है।''

शारीरिक चुनौतियुक्त छात्र–छात्राएँ असामान्य अवस्थाओं के कारण जीवन शक्ति मंद हो जाती है। उनके शिक्षण हेतु विशेष वातावरण, उपकरण, चिकित्सा व निर्देशन की आवश्यकता होती है। जैसे कि ऐसे छात्र–छात्राएँ जो दुर्घटनाग्रस्त होने के कारण अपनी दोनों टांगे, हाथ खो बैठता है, तो उसकी गतिशीलता अवरूद्ध हो जाती है। उसके गामक अवरोध का प्रभाव उसके सामाजिक विकास एवं अन्तवैयक्तिक संबंधों पर भी पड़ता है। अतः इसके लिए एक पहियेदार कुर्सी (व्हील चेयर) का प्रयोग करना आवश्यक हो जाता है।

समायोजन

क्रो व क्रो (1973)

''वह प्रक्रिया जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं, इच्छाओं को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में संतुलन बनाये रखता है, समायोजन कहलाता है।''

उपर्युक्त परिभाषा से स्पष्ट होता है कि समायोजन वह प्रक्रिया है जिसमें शारीरिक, मानसिक व व्यवहारिक क्रियाएँ निहित है। अगर मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उत्पन्न उन परिस्थितियों में अपने आप को असंतुलित रखता है तथा अपने व्यवहार को उन परिस्थितियों के अनुसार अपने में परिवर्तन नहीं करता है तो वह प्राणी वातावरण के साथ असंतुलन का उल्लेख करता है। व्यक्ति व वातावरण में एकरूपता के अभाव को कुसमायोजन कहते हैं। समायोजन के विभिन्न आयाम होते हैं।

स्वबोध

मैकडेविड व हेरारी (1968)

स्वबोध एक विशेष प्रकार की अभिवृत्यात्मक संरचना है, जो स्वयं के प्रति व्यक्त की जाती है।''

इस प्रकार ''किसी भी व्यक्ति द्वारा अपने गुणों, विशेषताओं के प्रति रखी जाने वाली मूल्यांकन अभिवृत्तियों के सेट को स्वबोध कहते हैं।''

स्वबोध व्यक्तित्व या छात्र–छात्राओं का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। जिसके द्वारा व्यक्ति, छात्र–छात्राएं अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोधकार्य के लिए निम्नाकिंत उद्देश्य निर्धारित किये गयेः–

1. शारीरिक चनौतियुक्त छात्र एवं छात्राओं के समायोजन का अध्ययन करना।
2. शारीरिक चनौतियुक्त छात्र एवं छात्राओं के स्वबोध का अध्ययन करना।
3. शारीरिक चनौतियुक्त छात्र एवं छात्राओं के समायोजन की तुलना करना।
4. शारीरिक चनौतियुक्त छात्र एवं छात्राओं के स्वबोध की तुलना करना।

शोध की परिकल्पना

इस शोध कार्य हेतु निम्नाकिंत परिकल्पनाएँ निर्धारित की गई है :–

1. शारीरिक चनौतियुक्त छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
2. शारीरिक चनौतियुक्त छात्र एवं छात्राओं के स्वबोध में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

न्यादर्श एवं समस्या का परिसीमन

प्रस्तुत अध्ययन के लिए जोधपुर और भीलवाड़ा जिले के 35 शारीरिक चुनौतियुक्त छात्रों एवं 35 शारीरिक चुनौतियुक्त छात्राओं (कुल न्यादर्श 70) का चयन किया गया।

इस शोधकार्य के लिए निम्न परिसीमाएँ निर्धारित की गई है :–

1. इस अध्ययन में केवल जोधपुर व भीलवाड़ा जिलों का चयन किया गया।
2. इस अध्ययन में केवल शारीरिक चुनौतियुक्त छात्र–छात्राओं को लिया गया है।

अध्ययन के लिए अपनाई गई विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए 'सर्वेक्षण विधि' का प्रयोग किया गया है।

उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन के लिए निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है:–

समायोजन सूची परीक्षण (विद्यालयी विद्यार्थियों हेतु) (AISS)

यह प्रमापीकृत उपकरण है जिसका निर्माण डॉ. ए.के.पी.सिन्हा व डॉ. आर.पी.सिंह द्वारा किया गया है। इस सूची परीक्षण में कुल 60 प्रश्न है, जिसके उत्तर हाँ या नहीं में देना होता है। इस सूची परीक्षण को भरने का कोई निर्धारित समय नहीं है।

स्वबोध प्रश्नावली (SEI – PART – I, II)

इस प्रमापीकृत उपकरण का निर्माण एम.एस. प्रसाद तथा जी.पी.ठाकुर द्वारा किया गया। इसके दो भाग है :–

1. व्यक्तिगत प्रत्यक्षीकृत स्व तथा
2. सामाजिक प्रत्यक्षीकृत स्व

परीक्षण में दो प्रश्नावलियाँ दी गई है :–

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध में प्रदत्त विश्लेषण एवं अर्थापन हेतु निम्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है।

1. मध्यमान
2. प्रमाप विचलन
3. क्रान्तिक अनुपात ('t' परीक्षण)

तथ्यों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शारीरिक चुनौतियुक्त छात्र व छात्राओं के समायोजन से संबंधित तथ्यों का विश्लेषण एवं व्याख्या निम्न प्रकार से दर्शायी गई है :–

सारणी संख्या – 01

शारीरिक चुनौतियुक्त छात्र एवं छात्राओं के कुल समायोजन के अंको से संबंधित सांख्यिकी

क्रम	वर्ग	न्यादर्श	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी– परीक्षण	सार्थकता (.05)
1.	छात्र	35	18.76	6.17	2.41	सार्थक
2.	छात्राऐं	35	15.30	5.87		

सारणी की व्याख्या

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि शारीरिक चुनौति युक्त छात्र व छात्राओं के कुल समायोजन अंको के मध्यमान का अन्तर 3.46 है। यह अन्तर सार्थक है या नहीं यह देखने के लिए 'टी' परीक्षण ज्ञात किया गया जिसका मूल्य 2.41 आया। 'टी' का सारणी मूल्य .05 विश्वास स्तर पर 1.96 है। चूंकि 'टी' का परीक्षण मूल्य 2.41 है, जो कि .05 स्तर पर सारणी मूल्य से अधिक है। अतः हम कह सकते है कि दोनों मध्यमानों के बीच का अन्तर सांख्यिकी की दृष्टि से सार्थक है।

आरेख –1 शारीरिक चुनौतियुक्त छात्र व छात्राओं के कुल समायोजन के अंकों का मध्यमान

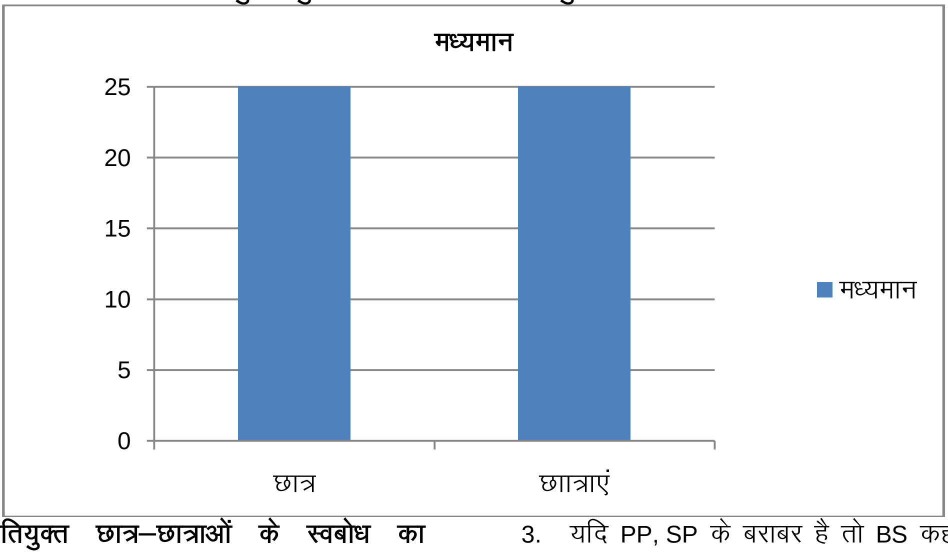

शारीरिक चुनौतियुक्त छात्र–छात्राओं के स्वबोध का अध्ययन

1. आत्म–प्रत्यक्षीकृत अंक (Personally-Perceived) तथा
2. सामाजिक–प्रत्यक्षीकृत अंक (Socially-Perceived)

प्रत्येक छात्र–छात्रा के इन दोनों प्राप्तांकों की तुलना कर उन्हें तीन भागों में बांटा गया :–

1. यदि PP, SP से ज्यादा है तो PS कहा जाता है।
2. यदि PP, SP से कम है तो NS कहा जाता है।
3. यदि PP, SP के बराबर है तो BS कहा जाता है।

PS = Positive Self
NS = Negative Self
BS = Balanced Self

शारीरिक चुनौतियुक्त छात्र व छात्राओं के स्वबोध के व्यक्तिगत–प्रत्यक्षीकृत स्व' से संबंधित तथ्यों का विश्लेषण एवं व्याख्या निम्न प्रकार से दर्शायी गई है–

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-5* January- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

सारणी संख्या – 2
शारीरिक चुनौतियुक्त छात्र व छात्राओं के 'व्यक्तिगत प्रत्यक्षीकृत स्व' के स्वबोध के अंकों से संबंधित सांख्यिकी

क्रम	वर्ग	न्यादर्श	मध्यमान	प्रमाप विचलन	'टी' मूल्य	सार्थकता (0.05)
1.	छात्र	35	145.42	16.79	0.7	असार्थक
2.	छात्राएँ	35	142.3	18.58		

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि शारीरिक चुनौतियुक्त छात्रों के स्वबोध के 'व्यक्तिगत–प्रत्क्षीकृत स्व से संबंधित अंको का मध्यमान व प्रमाप विचलन क्रमशः 145.42 व 16.79 आया है। जबकि शारीरिक चुनौतियुक्त छात्राओं के स्वबोध अंको का मध्यमान व प्रमाप विचलन क्रमशः 142.39 व 18.58 आया है। अतः हम कह सकते हैं कि शारीरिक चुनौतियुक्त छात्रों की अपेक्षा शारीरिक चुनौतियुक्त छात्राओं का व्यक्तिगत–प्रत्यक्षीकृत स्व अपेक्षाकृत कम है। छात्र–छात्राओं के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की गणना की गई, जिसका क्रांतिक अनुपात 0.7 आया है। यह मूल्य 0.05 विश्वास स्तर के मूल्य 1.96 से कम है। अतः इन विद्यार्थियों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

आरेख –2 शारीरिक चुनौतियुक्त छात्र व छात्राओं के स्वबोध के 'व्यक्तिगत–प्रत्यक्षीकृत स्व' से संबंधित सांख्यिकी

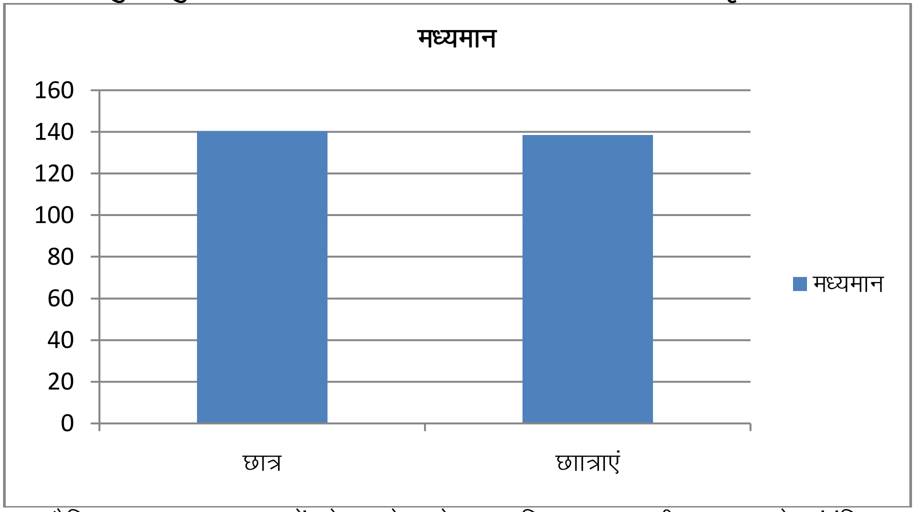

शारीरिक चुनौतियुक्त छात्र व छात्राओं के स्वबोध के 'सामाजिक – प्रत्यक्षीकृत स्व' से संबंधित तथ्यों का विश्लेषण एवं व्याख्या निम्न प्रकार से दर्शायी गई है :–

सारणी संख्या – 3
शारीरिक चुनौतियुक्त छात्र व छात्राओं के 'सामाजिक प्रत्यक्षीकृत स्व' स्वबोध के अंकों से संबंधित सांख्यिकी

क्रम	वर्ग	न्यादर्श	मध्यमान	प्रमाप विचलन	'टी' मूल्य	सार्थकता (0.05)
1.	छात्र	35	140.75	22.4	0.49	असार्थक
2.	छात्राएँ	35	138.35	17.57		

उपर्युक्त सारणी में शारीरिक चुनौतियुक्त छात्र–छात्राओं के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की गणना की गई, जिसका क्रांतिक अनुपात ('टी' मूल्य) 0. 49 आया है। यह मूल्य 0.05 विश्वास स्तर के मूल्य 1.96 से कम है। अतः अन्तर असार्थक है। अतः शारीरिक चुनौतियुक्त छात्र–छात्राओं के स्वबोध के 'सामाजिक–प्रत्यक्षीकृत स्व' में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

आरेख–3 शारीरिक चुनौतियुक्त छात्र–छात्राओं के स्वबोध के 'सामाजिक–प्रत्यक्षीकृत स्व' से संबंधित सांख्यिकी

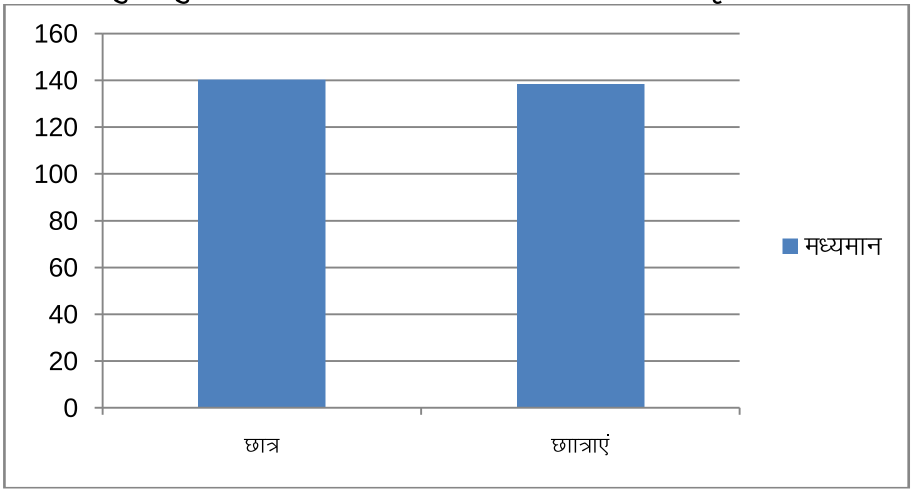

समायोजन से संबंधित निष्कर्ष

शारीरिक चुनौतियुक्त छात्र व छात्राओं के समायोजन के अंकों का मध्यमान ज्ञात किया गया। शारीरिक चुनौतियुक्त छात्रों के अंकों का मध्यमान 18.70 तथा शारीरिक चुनौतियुक्त छात्राओं के अंकों का मध्यमान 15.30 आया। मध्यमान में अन्तर की सार्थकता हेतु ज्ञात किये गये 'टी' मान का मूल्य 2.41 प्राप्त हुआ है जो 0.05 के विश्वास स्तर पर सार्थक है, अर्थात् छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में सार्थक अंतर है जो कि परकल्पना संख्या 1 को अस्वीकृत करता है।

स्वबोध से संबंधित निष्कर्ष

प्राप्त 'टी' मूल्य के आधार पर कह सकते हैं कि शारीरिक चुनौतियुक्त छात्र व छात्राओं के स्वबोध में अन्तर नहीं है, अर्थात् परिकल्पना संख्या 2 स्वीकृत की जाती है।

परिणाम

प्रस्तुत शोध अध्ययन के आधार पर निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि शारीरिक चुनौतियुक्त छात्र व छात्राओं (विद्यार्थियों) के समायोजन में स्पष्ट रूप से अंतर है जबकि स्वबोध में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *भट्ट उषा (1963)–फिजीकली हैण्डीकेप्ड, बॉम्बे पॉप्युलर प्रकाशन।*
2. *भार्गव महेश (1985)– आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण, मापन एवं मूल्यांकन, आगरा हर प्रसाद भार्गव।*
3. *चौहान दीपिका (1991–92)–विकलांग छात्रों की स्वधारणा, उपलब्धि, अभिप्रेरणा एवं समायोजन का अध्ययन।*
4. *ढोड़ियाल सच्चिदानंद एवं फाटक ए.बी. (1973)–शैक्षिक अनुसंधान का विधि शास्त्र, राज. हिन्दी ग्रंथ आकदमी 1973*
5. *कौशिक बी.एन. (1977)–विकलांग शिक्षा सिन्धु, राज. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर*
6. *फाटक ए.बी. (1983)–डिसेबल्ड चिल्ड्रन इन नार्मल स्कूल्स प्रोजेक्ट रिपोर्ट*
7. *सिंह डी.पी. (1983)–विकलांग एकीकृत शिक्षण, जामिया मिलिया इस्लामिया, भारतीय आधुनिक शिक्षा, जनवरी 1983*
8. *राजेन्द्र कुमार जैन (2007)–'माध्यमिक स्तर के सामान्य एवं अस्थि युक्त विकलांग विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृति, समायोजन तथा स्वबोध का तुलनात्मक अध्ययन', एम.एड लघु शोध प्रबंध, सीटीई, जोधपुर।*
9. *हेमलता कंसारा (2012) – 'जोधपुर के शारीरिक विकलांग विद्यार्थियों की आत्मसंतुष्टि व समायोजन का अध्ययन'।*
10. *श्रीमती अनिता सैन (2015) –'अस्थि विकलांग विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं समायोजन का उनकी शैक्षिक निष्पति के साथ संबंध का अध्ययन'*
11. *सिन्हा, ए.के.पी. एवं सिंह आर.पी. (1971,89) (AISS), नेशनल साइकोलॉजीकल कॉर्पोरेशन, आगरा।*
12. *प्रसाद, एम.एस. एवं ठाकुर जी.पी. (1977); स्वबोध प्रश्नावली ¼मसा.मिेजममउ पद टमदजवतलद्धए आगरा साइकोलॉजी रिसर्च सेल, आगरा।*
13. *व्यास, बी.एल. 1999; नई शिक्षा नीति और विकलांग बालकों की शिक्षा, दी राज. बोर्ड जर्नल ऑफ एजुकेशन, जुलाई–सितम्बर 1999, वोल्यूम–25*
14. *राजस्थान पत्रिका – दिव्यांग विद्यार्थियों के बारे में कानूनी अधिकार, रिश्ते पृष्ठ 2017*
15. *बुच एम.जी. 1988; सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन वोल्यूम–3; एनसीआरटी।*
16. *www.more-self-esteem.com*
17. *www.sje.rajasthan.gov.in*
18. *www.disability.india.org*